ओम् शान्ति 13-3-21 मधुबन

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा परमात्म प्यार में समाई हुई निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर यादप्यार स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - हम सबकी प्राणों से भी प्यारी पूरे ब्राह्मण परिवार की शान, बापदादा का प्यारा छोटा नंदी, मीठी मीठी दादी गुल्जार जी, अपनी यादों की अमर यादगार छोड़ अव्यक्त वतन वासी बन गई। आपने देश विदेश के लाखों भाई बहिनों को अपनी रूहानी नज़रों से निहाल किया। प्रभु मिलन की अनूभूतियां कराई। ऐसी मीठी प्यारी दादी का पार्थिव शरीर आज 13 मार्च 2021 प्रात: 10.00 बजे पंच तत्वों में विलीन हो गया। सभी मुख्य वरिष्ठ बहिनों एवं भाईयों ने अपने अनुभवयुक्त बोल से दादी जी को अन्तिम विदाई देते हुए अपनी स्नेह श्रंधाजलि अर्पित की। इस अवसर पर भारत तथा विदेश से अनेकानेक भाई बहिनें पहुंच गये थे। यह पूरा दृश्य तो आप सभी लाइव प्रसारण द्वारा देख ही रहे होंगे। सबकी नज़रें मधुबन में टिकी हुई थी। अन्तिम संस्कार के पश्चात सभी डायमण्ड हाल में एकत्रित हुए, जहाँ मधुबन की शशी बहन ने प्यारे बापदादा को भोग स्वीकार कराया। उन्होंने जो वतन का सन्देश सुनाया, वह आपके पास भेज रहे हैं। क्लास में सभी को सुनाना जी। अच्छा-सभी को याद... ओम् शान्ति।

दिव्य सन्देश:- 13-3-21

आज आप सबकी अति स्नेह भरी यादप्यार लेकर जैसे मैं वतन में पहुंची। वतन में आज अनेक प्रकार की हीरे मोतियों की डायमण्ड मालाओं से बहुत सुन्दर सजावट दिखाई दे रही थी। बाबा दूर से एक बहुत सुन्दर पुष्पक विमान की तरह सजे हुए रथ में आते हुए दिखाई दिये, उसमें बाबा और दादी दोनों थे, लेकिन उन्हें देखते ऐसे लगा जैसे दादी बाबा के रूप में और बाबा दादी के रूप में.. एक सेकण्ड बाबा, एक सेकेण्ड दादी। पहचाना भी नहीं जा रहा था कि यह दादी है या बाबा है। मैंने कहा बाबा आज तो दादी का रूप अलग ही दिखाई दे रहा है। तो बाबा ने कहा रथ का इतना महत्व होता है, बाप ने इस रथ को अच्छी प्लैनिंग से सम्पन्न बनाकर इस स्वरूप में भक्तों के सामने प्रत्यक्ष किया है। फिर मैंने कहा दादी आप तो ऐसे ही वतन में चली आई। तो दादी ने कहा बाबा मुझे रोज़ कहाँ ना कहाँ का सैर कराते थे। मैंने कहा आप कहाँ-कहाँ जाते थे ? तो मुस्कराते कहती है बाबा से पूछो। बाबा ने कहा इस बच्ची का शुरु से ऐसा पार्ट रहा है जो अनेक प्रकार के ट्रान्स मैसेज लेकर आती थी, जिससे यज्ञ के अनेक विशेष कार्य चलते रहे। लेकिन कुछ समय से बाबा बच्ची को भिन्न-भिन्न स्थानों पर ले जाकर कभी साइंटिस्ट की सेवा, कभी विश्व परिवर्तन करने वाले महान लीडर्स को सन्देश देकर विशेष प्रेरणा करती रही। फिर मैंने कहा दादी आपका शरीर क्या करता था! तो ददी ने कहा कि शरीर तो अपना काम करता था, बाबा अपना काम कराता था। तो बाबा ने कहा शुरू से ही इस बच्ची का न्यारे और प्यारेपन का, निसंकल्प रहने का पार्ट रहा है। डाक्टर शरीर की अच्छी तरह से सम्भाल कर रहे थे। उन्हें भी बहुत अच्छे अनुभव होते थे। कईयों को दादी का शरीर टच करने से भी शक्ति और वरदान की अनुभूति होती थी। फिर मैंने कहा दादी आज के दिन सभी आपको बहुत याद दे रहे हैं। तो दादी ने कहा मेरी भी सबको याद देना। इतने में क्या देखती हूँ - सामने बहुत सारे कार्ड थे, हर कार्ड पर कुछ न कुछ लिखा हुआ था। कोई दादी को थैंक्स लिख रहा था, कोई उल्हनें भी दे रहा था। दादी आपने हमें बाबा से मिलाया, कितने वरदान दिये, साकार बाबा का अनुभव कराया। तो जैसे दादी उन कार्डस को देखने लगी। तो वह कार्ड का जैसे पहाड़ दिखाई दे रहा था, वह पूरा पहाड़ एक छोटी

सी लाइट के रूप में परिवर्तन हो गया। उस लाइट से भी सबको शक्ति मिल रही थी। तो दादी कहती है यह जो अनुभव मिले हैं, शक्ति मिली है उसके लिए थैंक्स देने की बात नहीं है, बाबा कहते हैं बच्चे, अब इतने शक्ति सम्पन्न बनो जो दूसरों को भी सम्पन्न स्वरूप अनुभव कराओ।

फिर मैंने कहा बाबा आपने इस रथ द्वारा हम सबको इतने अनुभव तो कराये हैं, अब आगे क्या है ? तो बाबा ने कहा, अब बच्चों को अपने आपको स्वयं प्रपेयर (तैयार) करना है। जो कुछ मिला है, उसकी प्रैक्टिस करके हर बच्चे को परफेक्शन (सम्पूर्णता) की ओर जाना है। जैसे बच्ची हर चीज़ में परफेक्ट थी, ऐसे सभी बच्चों को भी खुद को सम्पन्न बनाकर नई दुनिया बनाना है। फिर बाबा ने सभी बच्चों को वतन में इमर्ज किया। बीच में बाबा और दादी थे। कभी दादी बाबा के हार्ट में दिखाई देती। कभी बाबा की बाहों में समाई हुई दिखाई दे रही थी। बाबा सभी को दृष्टि दे रहे थे, दृष्टि द्वारा हरेक के पास कोई न कोई वरदान पहुंच रहा था। दादी बहुत न्यारी प्यारी और लाइट रूप में दिखाई दे रही थी। बाबा ने कहा बाप ने बच्ची को शुरु से ही दिल में समाया है, बच्ची द्वारा विशेष कार्य कराये हैं। अभी भी नई दुनिया के लिए बच्चों को सम्पन्न बनाने के लिए, एडवान्स पार्टी के लिए बच्ची से सेवा करायेंगे।

फिर मैंने कहा बाबा आज दादी के लिए भोग लेकर आई हूँ! बाबा ने भोग खोला और दादी को खिलाने लगे तो दादी ने कहा आज सबको वतन में बुलाकर भोग खिलाना है। फिर दादी ने अपने हाथ से भोग उठाकर बाबा के हाथ में दिया। तो जैसे बाबा के हाथ से सभी के मुख में पहुंचता गया और हर एक को कोई न कोई वरदान भी मिलता गया। फिर मैने कहा दादी आपको सबके लिए कुछ कहना है। तो कहती है, बाबा इन सबको ऐसा एक तख्त दो जिस पर यह सब बैठे रहें। तो सामने तख्त इमर्ज हुआ। उसके चारों कोनों पर शब्द लिखे थे:- 1- मर्सीफुल, 2- शुभ भावना, 3-विश्व कल्याणकारी और 4- वरदानी। तो दादी कहती है अभी समय अनुसार हर एक को स्वयं प्रति भी मर्सीफुल बनना है। खासकर ब्राह्मणों प्रति जो कोई संकल्प आते हैं उन्हें मर्सीफुल बन स्वाहा करें। भक्तों पर और दूसरों पर तो मर्सी करना ही है, इससे खुद के अनुभव भी बढ़ेंगे और दुआयें भी मिलेंगी, समय अनुसार अभी इसकी जरूरत है।

फिर सभी दादियों की याद के साथ नीलू बहन और सेवा साथियों की याद दी। तो बाबा ने सबको वतन में इमर्ज किया। नीलू बहन और सभी सेवासाथियों को बाबा दृष्टि देते हुए बोले, कि देखो नीलू बच्ची ने कितना अथक होकर सेवा की है। बाबा ने हाथ पकड़कर झूला झुलाया और कहा बच्ची ने लगन से प्यार से साथियों को साथ लेकर सेवा का पार्ट बजाया है। इस पार्ट में अनेकों का भाग्य भी खुला है, अनुभव भी प्राप्त हुए हैं। इस रथ को प्यार से सम्भाला है, बाप तो साथ था ही। रथ की सम्भाल करना, वरदानों को प्राप्त करना, यह भी भाग्य को बढ़ाना है। बच्ची का भाग्य भी बहुत सुन्दर है।

फिर बाबा ने डाक्टर्स को इमर्ज किया और कहा इनको जो निमित्त सेवा मिली वो सेवा नहीं जीवन में अनेक अलौकिक शक्तियों की अनुभूति की। इसके द्वारा अपने अन्दर और गहरे अनुभव प्राप्त करने हैं। फिर दादी ने देश विदेश के भाई बहिनों को, खास दिल्ली के सभी स्थानों के भाई बहिनों को याद दिया। बाबा ने कहा, यह विश्व की दादी है, सबकी स्नेही रही है, सबका यादप्यार पहुंचा है। बाबा ने भी सबको यादप्यार दिया। फिर बाबा ने कहा बच्ची, अभी बाबा के साथ ही है। बाप ने बच्ची से विशेष कार्य कराये हैं और कराते रहेंगे। ऐसे सबकी याद प्यार लेते मैं नीचे आ गई।